अंक – 36 । जुलाई – दिसम्बर 2017

CIRG

अजामुख

भाकृअनुप ICAR

1979 MATHURA

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Institute for Research on Goats
(An ISO 9001:2008 Certified Organization)

सम्पादक मंडल

मुख्य सम्पादक:

डा. भुवनेश्वर राय

सम्पादक :

डा. गोपाल दास

डा. अनु राहल

डा. नीतिका शर्मा

डा. विजय कुमार

डा. चेतना गंगवार

टंकक

जगदीश चन्द्र

निदेशक, भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा (उ.प्र.) भारत द्वारा प्रकाशित

http://www.cirg.res.in

निदेशक की कलम से

प्रिय बकरी पालक किसान भाईयों मुझे इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है कि सी.आई.आर.जी. टीम निरन्तर आपसे संवाद करती है तथा बकरी पालन से सम्बन्धित ज्ञान को आपसे साझा करती है। हमारी टीम अपने ज्ञान को परिष्कृत करती रहती है, तथा देश के विभिन्न भागों में स्थित बकरी पालकों की समस्याओं का समाधान करती रहती है। संस्थान द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पशु चिकित्सक, पशुधन सहायक, किसान एवं उद्यमी शामिल हैं, इन्हें इनकी आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षण दिया जाता है जो कि इनके क्षेत्र विशेष में कारगर सिद्ध हों तथा बकरी पालन को बढ़ावा मिले। हमें इस बात की खुशी है कि हमारे द्वारा प्रशिक्षित किसान भाई देश के विभिन्न भागों में बकरी पालन को वैज्ञानिक तरीके से सफलतापूर्वक कर रहे हैं। बकरी पालन से देश के सुदूर कठिन परिस्थितियों में भी दूध, माँस एवं चमड़े का उत्पादन होता है। बकरी की चांगथांगी, असम हिल एवं चेगू नस्लें उच्च हिमालय क्षेत्रों में अच्छा उत्पादन करती हैं तथा वहाँ के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। मालाबारी, तेरेसा एवं गंजाम नस्लें देश के तटीय क्षेत्रों में सफलतापूर्वक पाली जा रही हैं, जमुनापारी नस्ल रेवाईन क्षेत्र में तथा मारवाडी एवं सिरोही मरूस्थलीय क्षेत्रों में अच्छा उत्पादन करती हैं। इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि बकरियाँ देश के सभी जलवायु क्षेत्रों में पाई जाती हैं तथा वहाँ के रहने वाले किसानों/ बकरी पालकों के आय का एक अच्छा स्रोत हैं।

बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान एक उन्नत तकनीक है, जिसका विकास करके देश में अच्छे नर/बकरों की कमी को पूरा किया जा सकता है। हमारे संस्थान में इस तकनीक को विकसित करने के लिए गम्भीरता से शोध कार्य किया जा चुका है और इसे बकरीपालकों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया जा रहा है । इससे बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान को बढ़ावा दिया जा सकता है। मैं आशा करता हूँ कि निकट भविष्य में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को विकसित करके इसे राष्ट्रीय स्तर पर बकरियों के प्रजनन कार्यक्रम का हिस्सा बना दिया जाएगा।

मैं संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को उनके अथक परिश्रम के लिए बधाई देता हूँ जो मिशन गोट को परिकल्पना को साकार करने के लिए कटिबद्ध है। मैं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के महानिदेशक एवं उप महानिदेशक (पशु विज्ञान) द्वारा समय-समय पर दिए गये सहयोग एवं मार्गदर्शन हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं इस अवसर पर अजामुख के प्रकाशन से सम्बंधित वैज्ञानिकों की टीम को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि बकरी पालन पर प्रकाशित संस्थान का यह मुखपत्र बकरी पालकों, उद्यमियों एवं पशु प्रसार में संलग्न कार्यकर्ताओं के लिए सहयोगी सिद्ध होगा।

(एम. एस. चौहान)
निदेशक

बकरियों में छेरा रोग (गिल्लर या पिट्टू रोग / ऐम्फीस्टोमिएसिस), बचाव एवं रोकथाम

रूपेश वर्मा, गिरिधारी दास एवं दिनेश कुमार शर्मा

परिचय :- यह रोग एम्फीस्टोम प्रजाति के परजीवियों से होता है जो रूमेन, रेटिकुलम तथा छोटी आँत के ऊपरी भाग में पाये जाते हैं इस रोग से तरूण बकरियाँ अधिक प्रभावित होती हैं इसका प्रकोप सामान्यत: शरद ऋतु के बाद अधिक होता है। रोग से ग्रसित पशु कमजोर, भूख, भार में कमी एवं पतले दस्त के शिकार होते हैं । पतले मल के साथ-साथ रक्त भी आने लगता है।

रोग का प्रसारण :- यह रोग पोखर, तालाब, नदी नाले के किनारे या उनके आस-पास वाले क्षेत्र में पाये जाने की संभावना अधिक रहती है क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में घोंघों कि संख्या अधिक मिलती है और इन घोंघों के शरीर में परजीवी अवस्थाओं का विकास होता है । घोंघे के शरीर से लार्वा अवस्था बाहर निकल कर आस-पास के पानी में या किनारे की घास पर स्थापित हो जाती हैं। कालान्तर में जब कोई पशु पानी पीने या किनारे की घास चरता है उक्त लार्वा पशु के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

रोग की व्यापकता :- भारत वर्ष में ऐम्फीस्टोमोसिस का रोग भेड़-बकरी के अतिरिक्त गाय-भैसों में भी व्यापक रूप से पाया जाता है । पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों के अलावा धान की खेती वाले अन्य राज्यों में भी यह रोग उल्लेखित है । रोग प्रभावित भेड़ रेवड़ में 30-40 प्रतिशत तक मृत्यु इस रोग के कारण पाई गई है।

रोगजनकता :- वयस्क परजीवी जो रूमन में पाये जाते हैं से बकरियों में कोई खास नुकसान नहीं होता है । परन्तु छोटी आँत के ऊपरी भाग में पाये जाने वाले अपरिपक्व अवस्थाएँ तीव्र रोगजनक प्रभाव उत्पन्न करती है। यह आंत की दीवार में घाव कर भोजन ग्रहण करते हैं। जिससे घाव एवं रक्त स्त्राव उत्पन्न होता है और प्रभावित पशु में भोजन का पाचन प्रभावित होता है।

रोग लक्षण :-

1. बदबूदार पतले दस्त के साथ रक्त का स्त्राव।
2. निचले जबड़े में सूजन।
3. पशु सुस्त, खून की कमी, दुर्बल तथा कमजोर होता जाता है।
4. खाना बन्द, अधिक प्यास, पेट दर्द तथा इलाज न मिलने की स्थिति में मृत्यु हो जाती है।

निदान :- इस रोग का निदान रोग के लक्षणों, क्षेत्रीय पशु रोग इतिहास तथा मल के साथ विसर्जित परजीवी की उपस्थिति पर निर्भर करता है।

1. मल परीक्षण :- चूँकि यह रोग अपरिपक्व (इम्मेच्योर) परजीवियों से होता है इसलिये मल में इसके अण्डे बहुत कम मिल सकते हैं या कभी-कभी बहुत अधिक मिल सकते है क्योंकि अपरिक्व परजीवी के साथ वयस्क परजीवी भी हो सकते हैं।

2. शव परीक्षण :- शव परीक्षण करने पर पशु की आँत के ऊपरी हिस्से की म्यूकोसा (श्लेष्मा) मोटी एवं नेक्रोटिक मिलती है और साथ ही बहुत अधिक परजीवी पाये जाते हैं। जो आकार में अनार के दाने की तरह या चावल से बने मुर्रा जैसे दिखाई पड़ते हैं।

उपचार :-

1. आक्सीक्लोजानाइड-18.5 मि.ग्रा./प्रति कि.ग्रा. भार के अनुसार
2. ट्राइक्लाबेंडाजोल 10 मि.ग्रा./प्रति कि.ग्रा. शरीर भार के अनुसार।
4. उपरोक्त औषधी पशुचिकित्सा की सलाह लेकर ही लेवें।

रोकथाम :-

1. पशुओं को साफ चारागाहों में चराना चाहिए तथा तालाब, नदियों-नालों के आस-पास वाले क्षेत्रों में नहीं चराना चाहिए।
2. स्वच्छ एवं ताजा पानी जैसे टयूबबैल या हेंडपम्प का पानी पिलाना चाहिए।
3. प्रभावित क्षेत्रों में घोंघा नाशक दवाई जैसे कॉपर सल्फेट का छिड़काव करना चाहिए।
4. पशुचिकित्सक की सलाह लेकर पशुओं को साल में 2-3 बार कृमिनाशक दवा का प्रयोग करना चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्र के लिए एक सरल एवं सफल रोजगार: बकरी पालन

डा. साकेत भूषण

गाँवों के अधिकांशत: मजदूर, भूमिहीन कृषक और पिछड़े वर्गों के परिवार अपने जीवनयापन के लिए मजदूरी के साथ बकरी पालन भी करते हैं। बकरी पालन में लागत कम होने के साथ आजीविका के विकल्प भी बढ़ जाते हैं। भारत की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में बकरी जैसा छोटे आकार का पशु भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विगत 2–3 दशकों में ऊँची वार्षिक वध दर के बावजूद विकासशील देशों में बकरियों की संख्या में निरंतर वृद्धि, इनके सामाजिक और आर्थिक महत्व को दर्शाती है। प्राकृतिक रूप से निम्न कारक बकरी विकास दर को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं :

- बकरी का विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में अपने को ढालने की क्षमता रखना। इसी गुण के कारण बकरियाँ देश के विभिन्न देश के विभिन्न भौगोलिक भू भागों में पाई जाती हैं।
- बकरी की अनेक नस्लों का एक से अधिक बच्चे देने की क्षमता रखना।
- बकरी को ब्याने के उपरान्त अन्य पशु प्रजातियों की तुलना में पुन: जनन के लिए जल्दी तैयार हो जाना।
- बकरी माँस का समाज में सभी वर्गों द्वारा बिना किसी धार्मिक बंधन के उपयोग किया जाना।

अच्छी नस्ल की बकरियाँ पालने के लिए किसानों को देने से उन्हें अच्छा लाभ होगा। ग्रामीण परिस्थितियों में प्रजनन सम्बन्धी नियमों (चयन, निष्कासन एवं प्रजनन) का पालन कर किसान भाई अपनी स्थानीय बकरियों की उत्पादकता भी बढ़ा सकते हैं। चयन से तात्पर्य अच्छे गुणों वाले पशुओं का चुनाव करना जबकि निष्कासन से तात्पर्य अवांछनीय पशुओं को रेबड़ से निकाल देना है। अच्छे पशुओं का चयन होने से शेष बचे पशुओं का निष्कासन कर दिया जाता है जिससे अच्छे पशुओं के बीच प्रजनन हो सके। चयन का मुख्य उद्देश्य आगे आने वाली पीढ़ियों में पहली पीढ़ी की अपेक्षा अधिक सुधार करना है जिससे आगे की पीढ़ियों में वे गुण पैदा किए जा सकें जिससे बकरियों में उत्पादन बढ़े और किसान को अधिक से अधिक लाभ हो सके। रेबड़ में निष्कासन 10–15 प्रतिशत तक आसानी से किया जा सकता है। इसके प्रयोग से बकरियों की आगे की पीढ़ियों में सुधार किया जा सकता है। किसानों को बकरी पालन के आर्थिक तथा वैज्ञानिक महत्व के बिन्दुओं की जानकारी नहीं होने के कारण वे उन पर उचित ध्यान नहीं देते। बकरी पालन अन्य पशुओं की अपेक्षा सरल तथा सस्ता साधन है जिससे छोटे किसान व्यावसायिक बकरी पालन आसानी से कर सकते हैं। ज्यादा बकरी पालने पर भी बकरी खरीदने में उनको दाना चारा देने में तथा बकरी बाड़ा बनाने में गाय अथवा भैंस पालन से बकरी पालन में कम खर्च की आवश्यकता होती है। बकरियों का पालन छोटे स्तर पर तो इनका कोई विशेष प्रबन्धन नहीं किया जाता है तथा किसान इनके लिए अलग बाड़े का निर्माण भी नहीं करते। ज्यादातर किसान बकरी बाड़ा अलग से नहीं बनाते हैं वरन् 4–5 बकरी तक घर पर ही किसी छोटी फालतू जगह में अथवा अपने बरामदे में रख कर पाल लेते हैं। गाय, भैंस तथा अन्य जानवरों को पालने में अधिक खर्च आता है जिस कारण गाय भैंस सम्पन्न किसान ही पाल सकता है। परन्तु बकरी पालन भूमिहीन किसान अथवा गांव का बेरोजगार युवक आसानी से कर सकता है। बकरी की देखभाल सम्बन्धी सारे कार्य परिवार के छोटे बडे सभी सदस्य महिलाऐं तथा बच्चे भी कर सकते हैं। अधिकांश भूमिहीन परिवारों में महिलाऐं तथा बच्चे बकरियों को चरा भी लाते हैं। जिससे पुरूष बाहर खेती में तथा अन्य जगहों पर मजदूरी का कार्य कर लेते हैं।

बकरियों के नर बच्चे 1–2 साल के बीच की उम्र के हो जाने पर माँस के लिए बेच दिये जाते हैं जिनकी अच्छी कीमत मिल जाती है। इसी तरह बकरियाँ जब ज्यादा उम्र की हो जाती हैं तथा दूध देना बन्द कर देती हैं और उनके बच्चे पैदा करने की क्षमता खत्म हो जाती है तब उन बकरियों को भी किसान माँस के लिए बेच कर काफी मुनाफा कमा सकता है। बकरियों से किसानों को दूध, माँस तथा खाल प्राप्त होती है। बकरी का दूध शहरों में कम बिकता है इस कारण बकरियों से प्रतिदिन प्राप्त दूध का एक हिस्सा परिवार के सदस्य प्रयोग में ले लेते हैं जिससे परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। बकरियों के मर जाने पर उनकी खाल भी बिक जाती है जिसकी अच्छी कीमत प्राप्त हो जाती है। बकरियाँ एक से डेढ़ वर्ष की उम्र में प्रजनन के लिए परिपक्व हो जाती हैं जिससे बकरियों से बच्चे तथा दूध शीघ्र मिलना शुरू हो जाता है और इसके बाद किसान को उनसे आय शीघ्र ही मिलना शुरू हो जाता है। बकरियों में गर्भकाल लगभग 148 से 152 दिन का होता है। इस तरह से इनको एक डेढ़ वर्ष में दो बार प्रजनन कराने पर 2 से 4 मेमने पैदा हो जाने पर ग्रामीण भूमिहीन किसानों को अच्छा लाभ प्राप्त हो सकता है।

बकरी पालन हेतु सावधानियाँ : गाँवों के क्षेत्र जंगल से सटे होने के कारण वहाँ जंगली जानवरों का भय बना रहता है। बकरी के छोटे बच्चों को कुत्तों से बचाकर रखना पड़ता है। बकरी एक ऐसा

जानवर है जो फसलों को अधिक नुकसान पहुँचाती है। इसलिए खेत में फसल होने की स्थिति में विशेष रखवाली करनी पड़ती है।

बकरी पालन के विशेष लाभ : जरूरत के समय बकरियों को बेचकर आसानी से नकद पैसा प्राप्त किया जा सकता है। इस व्यवसाय को करने के लिए विशेष प्रकार के तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं रहती है। यह व्यवसाय बहुत तेजी से फैलता है। इसलिए यह व्यवसाय कम लागत में अधिक मुनाफा देना वाला है। इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध है अधिकतर व्यवसायी गाँव से ही आकर बकरे/बकरी को खरीद कर ले जाते हैं।

बकरी दूध : पोषण एवं औषधीय गुणों का भण्डार

पल्लवी सिंह एवं मनोज कुमार सिंह

दूध एक ऐसा लगभग सम्पूर्ण आहार है जिसने अपनी पारंपरिक भूमिका का विस्तार किया है और जो मानव जाति के लिए पोषक तत्वों का स्रोत है। पिछले कुछ दशकों में दूध में उपस्थित तत्वों, सक्रिय जैविक घटकों तथा उनके मानव के जैविक कार्यों पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों के अध्ययन में विशेष प्रगति हुई है। परिणामस्वरूप दूध को एक क्रियाशील आहार के रूप में देखा जाने लगा है। क्रियाशील आहार से तात्पर्य ऐसे आहार से है जो सकारात्मक रूप से मानव शरीर के जैविक कार्यों को प्रभावित करता हो, स्वास्थ्य में सुधार करता हो तथा रोग उत्पन्न होने के जोखिम को कम करता हो। बकरी के दूध में उपरोक्त सभी गुण विद्यमान होने के कारण यह एक उत्तम क्रियाशील आहार है। एक उत्कृष्ट खाद्य स्रोत के रूप में बकरी का दूध दिन प्रतिदिन ख्याति अर्जित कर रहा है। आधुनिक परिदृश्य में बदलती जीवन शैली तथा समयाभाव के कारण ऐसे भोज्य पदार्थों की माँग बढ़ती जा रही है जो स्वयं में पूर्ण हों। बकरी का दूध एक ऐसा ही एक लगभग सम्पूर्ण आहार है जो नवजात बच्चों से लेकर वृद्धों एवं रोगियों तक सभी के लिए समान रूप से पौष्टिक एवं स्वास्थ्यवर्द्धक है। बकरी के दूध में उपस्थित बीटा केसीन प्रोटीन इसके महत्व को दुगुना कर देता है तथा इसे मानव दूध के समतुल्य स्वास्थ्यवर्द्धक बना देता है। बीटा केसीन प्रोटीन की उपस्थिति के कारण बकरी के दूध को ए2 प्रकार के दूध की श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। ए2 प्रकार के दूध का विशेष औषधीय महत्व है क्योंकि इस प्रकार का दूध कोई एलर्जी उत्पन्न नहीं करता। यही कारण है कि जिन बच्चों को गाय के दूध से एलर्जी होती है उनके उपचार के लिए बकरी के दूध का प्रयोग किया जाता है। बकरी के दूध में गाय के दूध की तुलना में 27 प्रतिशत अधिक सेलेनियम पाया जाता है। सेलेनियम तत्व ग्लूटाथियोन परऑक्सीडेज की क्रियाशीलता को प्रभावित करता है। ग्लूटाथियोन परऑक्सीडेज स्वतन्त्र अणुओं से जुड़कर कैंसर को रोकता है। सेलेनियम की कमी से शरीर में प्लेटलेट की संख्या कम हो जाती है जोकि डेंगू बुखार की प्रमुख समस्या है। डेंगू रोगियों के लिए बकरी के दूध का निर्धारण मुख्य रूप से शरीर द्रव संतुलन को बनाये रखने के लिए किया जाता है। बकरी के दूध में उपस्थित लैक्टोपर-ऑक्सीडेज के कारण यह हैजा, टायफाइड, निमोनिया तथा भोजन विषाक्तता जैसी बीमारियाँ उत्पन्न करने वाले जीवाणुओं के विरूद्ध अत्यन्त प्रभावकारी है। बकरी, गाय और मानव सभी के दूध में लैक्टोज होता है। इसके बावजूद लैक्टोज असहिष्णुता वाले कई लोग बकरी का दूध पीते हैं। ऐसा बकरी के दूध की बेहतर पाचन क्षमता के कारण होता है। बकरी का दूध गाय के दूध की तुलना में पूरी तरह से अवशोषित हो जाता है तथा कोलोन में कम अवांछित अवशेष छोड़कर लैक्टोज असहिष्णुता की असुविधा को कम करता है।

बकरी के दूध में उपस्थित सियालिक अम्ल का प्रतिशत मानव दूध के समान ही होता है। सियालिक अम्ल नवजातों के मस्तिष्क के विकास तथा प्रतिरक्षा तन्त्र को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बकरी के दूध की बेहतर पाचन क्षमता, वसा अम्लों की उचित संरचना और सक्रिय जैविक घटकों की उपस्थिति इसे अनेक चिकित्सीय स्थितियों (डेंगू, कैंसर, टायफाइड, निमोनिया, हैजा इत्यादि) के उपचार व रोकथाम के लिए उपयुक्त गुण प्रदान करती है। अच्छी गुणवत्ता वाले बकरी के दूध को क्रियाशील आहार के रूप में उपयोग किया जा सकता है तथा इसका मूल्य संवर्द्धन करके इससे अनेक पौष्टिक एवं गुणकारी भोज्य पदार्थ बनाये जा सकते हैं। जैसे-द्रव पेय उत्पाद (कम वसा युक्त), पनीर, मक्खन या दही जैसे उत्पाद आइसक्रीम, मिठाई, कैंडी, नवजात बच्चों के लिए दुग्ध पाउडर इत्यादि।

बकरी के दूध से निर्मित संदेश (बंगाली मिठाई)

शुक्राणु लिंग विवेधन एक नवीनतम तकनीक

चेतना गंगवार, एस.डी. खर्चे एवं रवि रंजन

शुक्राणु लिंग विवेधन वर्तमान युग में जनन सम्बन्धी एक नवीनतम तकनीक है। इस तकनीक द्वारा हम मनवांछित लिंग का पशु प्राप्त कर सकते हैं। डेयरी उद्योग से जुड़े बकरी पालक हमेशा चाहते हैं कि उनकी बकरियाँ सदैव मादा बकरी को ही पैदा करें तथा माँस उद्योग से जुड़े बकरी पालक चाहते हैं कि उनकी बकरियाँ हमेशा बकरा ही पैदा करें, अत: शुक्राणु लिंग विवेधन द्वारा हम प्रारम्भिक स्तर पर ही एक्स (X) व वाई (Y) अलग कर सकते हैं। शुक्राणुओं का अलगीकरण मुख्यत: एक्स व वाई शुक्राणुओं में डी.एन.ए. के भार में अंतर पर निर्भर करता है। प्राय: ऐसा पाया गया है कि एक्स शुक्राणुओं में वाई शुक्राणुओं की अपेक्षा 4 प्रतिशत डी.एन.ए. भार अधिक होता है और इस तरह दोनों प्रकार के शुक्राणुओं के डी.एन.ए. को एक विशिष्ट प्रकार के फ्लोरोसेन्ट स्टेन से रंग कर इन्हें फ्लोसाइटोमीटर उपकरण द्वारा अलग–अलग कर लिया जाता है। इस तकनीक का उपयोग अभी बकरियों में नहीं हुआ है, यद्यपि इसका उपयोग अभी गायों में प्रारम्भिक स्तर पर हो रहा है।

शुक्राणु लिंग विवेधन के लाभ :

1. मनवांछित पशु संतति प्राप्त होने की सम्भावनाऐं अधिक हैं ।
2. अच्छी मादा व नर के गुणों का शीघ्रता से विस्तार सम्भव है।
3. इस तकनीक का प्रयोग कर हम कम समय में डेयरी या माँस उद्योग विकसित कर सकते हैं।

शुक्राणु लिंग विवेधन की हानियाँ

1. लिंगविवेधन के दौरान शुक्राणुओं में क्षति हो जाती है अत: ग्याभिन दर घट जाती है।
2. लिंग विवेधन एक धीमी गति की प्रक्रिया है जिससे हमें प्रति स्ट्रा कम शुक्राणु उपलब्ध हो पाते हैं।
3. लिंगनिर्धारित स्ट्रा की कीमत काफी अधिक होती है।
4. लिंगनिर्धारित वीर्य से ब्यांत दर सामान्य वीर्य द्वारा गर्भित पशु की ब्यांत दर से लगभग 20 प्रतिशत तक कम हो जाती है।

प्रकाशन

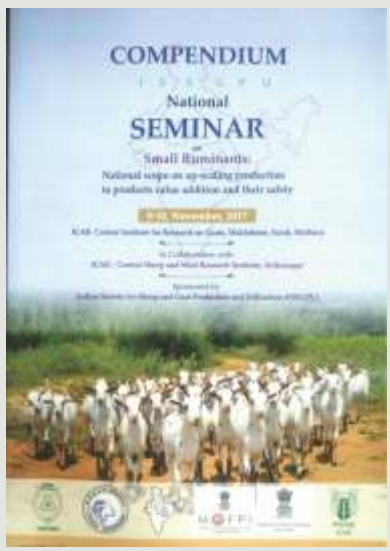

प्रयोगशाला से गांव तक

बदन सिंह आर्य

प्रयोगशाला से गांव तक

एक अभियान और चलाना होगा ।
जन जन को बकरी का लाभ बताना होगा।।
प्रयोगशाला से गांवों तक।
वैज्ञानिक विचारों को पहुंचाना होगा।।
बकरी पालन करने लागें लोग।
हर हाथ में बकरी का बच्चा होगा।।
बकरी का महत्व समझ गये लोग।
प्रयोगशाला से गांव तक का नारा सच्चा होगा।।
सोच सोच समय ना व्यर्थ गंवाये।
बकरी पालन सभी अपनायें।।
बड़ा होगा जब बकरी का बच्चा।
दूध व पनीर का सपना कर देगा सच्चा।।
रोजगार की आशा से मानव तू।
अपनी कार्य कुशलता का परिचय दे दे।।
एक बात तू दिमाग में भर ले।
धरम करम तू एक साथ करले।।
दोनों हाथ लड्डू तेरे।
दूध मिले बच्चा वृद्धि से दाम घनेरे।।
लोग विचार सब अपने बदलें।
बच्चे, औरत व बूढ़े हाथ में बकरी को ले ले ।।
बदन सिंह समझाये बकरी पालन से सभी लोग जुट जाओ।
बकरी पालन का प्रयास सफल कर अपना जीवन धन्य बनाओ।।
बकरी से खुशहाल हर परिवार होगा।
तब सार्थक अभियान हमारा होगा।।

प्रसार एवं किसान शिक्षा कार्यक्रम / प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

राष्ट्रीय प्रशिक्षण

- दिनांक 22–29 अगस्त, 2017 तक 71वें आठ दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण का आयोजन संस्थान में किया गया। इस कार्यक्रम में देश के 19 राज्यों से आए 63 सहभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

- दिनांक 21–28 अक्टूबर, 2017 तक 72वें आठ दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में 19 राज्यों से आए 78 सहभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

- दिनांक 23–30 नवम्बर, 2017 तक 73वें आठ दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में 17 राज्यों से आए 83 सहभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रायोजित प्रशिक्षण

पशु चिकित्सा अधिकारियों का प्रशिक्षण

- संस्थान में दिनांक 2–3 अगस्त, 2017 की अवधि में पशुपालन विभाग, इटावा द्वारा प्रायोजित बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 36 बकरी पालकों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया गया।

- दिनांक 7–8 अगस्त, 2017 के दौरान पशुपालन विभाग, इटावा द्वारा प्रायोजित बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 31 बकरी पालकों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया गया।

- दिनांक 4–5 सितम्बर, 2017 की अवधि में पशुपालन विभाग, इटावा द्वारा प्रायोजित बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 24 पशुधन प्रसार अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया गया।

- दिनांक 18–21 दिसम्बर, 2017 के दौरान आत्मा, दरभंगा, बिहार द्वारा प्रायोजित बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 21 बकरी पालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रदर्शनी / किसान मेला

- दिनांक 12–22 नवम्बर, 2017 के दौरान डी.बी.टी. द्वारा प्रायोजित स्परमेटोगोनियल स्टेम सेल बायोलाजी विषय पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें पूर्वात्तर क्षेत्र से आये 07 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्रदर्शनी/किसान मेला

- केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर में आयोजित मेले में दिनांक 8 दिसम्बर, 2017 को संस्थान के प्रसार विभाग द्वारा सहभागिता की गई।

- दिनांक 21–25 सितम्बर, 2017 को दीनदयाल धाम नगला चन्द्रभान, मथुरा में आयोजित कृषि एवं ग्राम विकास प्रदर्शनी में संस्थान द्वारा सहभागिता की गई।

- मथुरा में आयोजित किसान मेले में दिनांक 23 दिसम्बर, 2017 को संस्थान द्वारा सहभागिता की गई।

- दिनांक 28–29 अक्टूबर, 2017 को कोटवा, मोतीहारी (बिहार) में आयोजित पशुधन विकास सम्मेलन में सहभागिता की गई।

सभा / आयोजन

- **ग्रीष्मकालीन स्कूल**

संस्थान में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित ग्रीष्मकालीन स्कूल आयोजित किया गया। इसका विषय छोटे रोमन्थी पशुओं में जनन तकनीकों द्वारा जनन दर बढ़ाना था। इस ग्रीष्मकालीन स्कूल के कोर्स कोर्डिनेटर डा. एस.डी. खर्चे थे। इनके साथ डा. रवि रंजन एवं डा. महेश शिवानन्द दिगे, सहायक कोर्स कोर्डिनेटर थे। इस कार्यक्रम में 25 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

यह पाठयक्रम व्याख्यान, प्रदर्शन, विचार–विमर्श, प्रयोगात्मक प्रशिक्षण, नवीनतम सहायक जनन तकनीकियों एवं स्तम्भ कोशिका तकनीकियों पर आधरित था। यह सभी व्याख्यान एवं प्रदर्शन विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागियों के लिए आयोजित किये गए । इसके साथ–साथ अतिथि व्याख्यान पूर्व निदेशक के.ब.अ.सं. डा. एस. के. अग्रवाल एवं डा. मोनिका सचदेव वरिष्ठ वैज्ञानिक के.औ.अ.सं. लखनऊ द्वारा दिया गया । यह कार्यक्रम 6 जुलाई, 2017 से प्रारम्भ हुआ, जिसका उद्घाटन डा. मोती लाल मदन, पूर्व कुलपति, पी.डी.के.वी.,

सभा / आयोजन

अकोला, दुवासु एवं पूर्व उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का समापन दिनांक 26 जुलाई, 2017 को डा. एन.एस. राठौर, उपमहानिदेशक (शिक्षा) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा किया गया।

• संस्थान का 38वाँ स्थापना दिवस

संस्थान का 38वां स्थापना दिवस दिनांक 12 जुलाई, 2017 को मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा संस्थान में वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों ने बढ़ चढकर हिस्सा किया। तत्पश्चात निदेशक महोदय ने एक सभा को सम्बोधित किया, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों की चर्चा की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सी.एस.डब्ल्यू.आर.आई., अविकानगर के निदेशक डा. एस.एम.के. नकवी भी उपस्थित थे।

• स्वतंत्रता दिवस समारोह

देश के 71वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त, 2017 को संस्थान के निदेशक डा. एम.एस. चौहान द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने सम्बोधन में स्वतंत्रता दिवस के महत्व को रेखांकित किया। इसके साथ ही सभी वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को उनके शोध कार्यों में दिए गये योगदान की सराहना की, जिसके फलस्वरूप बकरी पालन के देश में एक नई दिशा मिल रही है।

• हिन्दी पखवाड़ा-2017

संस्थान में दिनांक 14-28 सितम्बर, 2017 के मध्य राजभाषा अनुभाग द्वारा हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। राजभाषा अनुभाग के प्रभारी डा. हरिऔध तिवारी की देखरेख में हिन्दी से सम्बन्धित अनेक प्रतियोगिताऐं जैसे सुलेख लेखन, हिन्दी अनुप्रयोग, हिन्दी हस्ताक्षर, हिन्दी निबन्ध तथा हिन्दी शोध पत्र प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों एवं उनके पाल्यों द्वारा सहभागिता की गई। इस कार्यक्रम के समापन के अवसर पर आगरा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर

सभा / आयोजन

डा. नवीर कान्ति ब्योम द्वारा व्याख्यान दिया गया तथा संस्थान निदेशक द्वारा कर्मचारियों को पारितोषिक वितरित किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने सम्बोधन में संस्थान के काम काज में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया।

• सतर्कता सप्ताह 2017

केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देश पर संस्थान में दिनांक 30 अक्टूबर, 2017 के मध्य सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इसका शुभारम्भ निदेशक महोदय द्वारा किया गया। संस्थान के सतर्कता अधिकारी डा. एस.डी. खर्चे ने संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शपथ दिलाई गई, जिससे सभी कर्मचारी अपने कार्यक्षेत्र में शुचिता का अनुपालन करें।

• राष्ट्रीय सेमीनार 2017

इजगप्पु सोसायटी द्वारा संस्थान में लघु रोमन्थी पशुओं के उत्थान एवं आजीविका सुरक्षा विषय पर दिनांक 9–11 नवम्बर, 2017 को एक राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमीनार के सदस्य सचिव डा. वी. राजकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक थे। इसमें देश के विभिन्न भागों से आये कुल 350 प्रतिभागियों/शोध कर्ताओं ने भाग लिया। इस सेमीनार की समाप्ति पर कुछ महत्वपूर्ण संस्तुतियॉ की गई, जिनका विवरण निम्न प्रकार से है।

- लघु रोमन्थी पशुओं के सुधार के लिए उन्नत जनन तकनीकों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- डिजाईनर मांस एवं दूध के सुधार हेतु पोषण व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक है।
- जेनेटिक मार्कर का उपयोग करके बीमारी रहित पशुओं की पहचान करके, उनके उपयोग की सम्भावना पर विचार किया जाए।
- पशु चिकित्सकों को बकरियों के रोगों के बारे में प्रशिक्षण के माध्यम से जागरूक करना चाहिए, विशेषरूप से बीमारियों के निदान एवं चिकित्सा के सम्बन्ध में।
- लघु रोमन्थी पशुओं (बकरी एवं भेड़) के दूध पर भी और अधिक शोध की आवश्यकता है।

सभा / आयोजन

- स्वच्छ माँस उत्पादन हेतु बूचड़खानों को अभिप्रेरित किया जाये तथा मांस के अलावा बचे हुए वेस्ट का भी उपयोग सुरक्षात्मक रूप से किया जाए।
- बकरी/भेड़ पालकों की सहकारी समितियाँ बनाकर उनके उत्पादों के क्रय विक्रय को एक नया रूप देना चाहिए।
- प्रसार कार्य से जुड़ी संस्थाओं को बकरी भेड़ पालकों का सर्वेक्षण कार्य करके, उनकी आवश्यकता के अनुरूप तकनीकों को प्रचारित किया जाए।

सम्मान, पुरस्कार एवं विशिष्ट उपलब्धि

- 20 अगस्त, 2017 को करनाल (हरियाणा) में आयोजित समारोह में भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका द्वारा डा. गोपाल दास को उनके हिन्दी पत्र के लिए जय किसान जय विज्ञान सम्मान पत्र एवं कृषि विज्ञान गौरव 2017 सम्मान से पुरस्कृत किया गया।
- डा. चेतना गंगवार को अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ लाइवस्टाक रिसर्च के उत्कृष्ट रिव्यूअर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- संस्थान की वैज्ञानिक डा. गंगवार को सितम्बर, 2017 को विद्यावाचस्पति की उपाधि प्रदान की गई जिसे राज्यपाल महामहिम श्री रामनाईक द्वारा प्रदान किया गया।

- डा. रवीन्द्र कुमार को आस्ट्रेलिया सरकार प्रदत्त अन्तर्राष्ट्रीय एनडेवर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- अक्टूबर 2017 को जम्मू में शेर ए कश्मीर पशु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आयोजित बायोइंफोरमेटिक्स एवं बायोलोजिकल साइन्स कांफ्रेन्स 2017 में डा. रवीन्द्र कुमार को विशिष्ट उपलब्धि सम्मान से सम्मानित किया गया।
- अक्टूबर 11–13, 2017 को पशु चिकित्सा विज्ञान कालेज एस.वी.वी. यू. तिरूपति में आयोजित आई ए.वी.पी. एच.एस. के राष्ट्रीय सिमपोसियम में डा. एम. सुमन कुमार को बैस्ट पोस्टर पेपर प्रस्तुति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- अक्टूबर, 23–25, 2017 को हैदराबाद में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कृषि एवं पशु चिकित्सा विज्ञान: अनुसंधान एवं तकनीकी कांफ्रेस एवं एक्पो में डा. एन. रामाचन्द्रन को बैस्ट पेपर प्रेजेंटेशन सम्मान प्रदान किया गया।
- एशियन पशु चिकित्सा विज्ञान कांग्रेस के बैंगलूरू में पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय में आयोजन पर 9–11 नवम्बर, 2017 को डा. राजवीर सिंह पवैया का भारतीय एसोसियेट ऑफ पैथौलोजिस्टकी फैलोशिप प्रदान की गई।
- नवम्बर, 9–11, 2017 को केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मथुरा में आयोजित भारतीय भेड़ एवं बकरी उत्पादन एवं उपयोगिता सोसायटी में डा. अशोक कुमार ने सोसायटी की फैलोशिप प्राप्त की।
- नम्बर, 9–11, 2017 को केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मथुरा में आयोजित भारतीय भेड़ एवं बकरी उत्पादन एवं उपयोगिता सोसायटी में डा. मनोज कुमार सिंह ने सोसायटी की फैलोशिप प्राप्त की।

सम्मान, पुरस्कार एवं विशिष्ट उपलब्धि

- डा. रवीन्द्र कुमार, रवि रंजन, एस. पी. सिंह, के. गुरूराज एवं विजय कुमार को भारतीय भेड़ एवं बकरी उत्पादन एवं उपयोगिता सोसायटी राष्ट्रीय सेमीनार 9–11 नवम्बर, 2017 में प्रस्तुति के लिए सर्वोत्तम शोध पत्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- दिसम्बर 2–4, 2017 को जी.आर.आई.एस.ए. ए. एस. 2017 उदयपुर राजस्थान में डा. ए.के. मिश्रा को बेस्ट पोस्टर प्रस्तुति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विशिष्ट अतिथि दौरा

श्री छविलेन्द्र राउल, अतिरिक्त सचिव (डेयर) एवं सचिव भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली ने भा.कृ.अ.प.–सी.आई.आर.जी.का भ्रमण 21 अगस्त 2017 को किया ।

श्रीमति दुर्गा शक्ति नागपाल (आई.ए.एस.), ओ.एस.डी. (केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री) ने संस्थान का भ्रमण 7 अगस्त 2017 को किया ।

डा. उज्जवल कुमार (आई.ए.एस.), मथुरा नगर निगम आयुक्त ने भा.कृ.अ.प.–सी.आई.आर.जी.का भ्रमण 30 नवम्बर 2017 को किया ।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
(ISO 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत
दूरभाष न.: 0565–2763380, फैक्स न.: 0565–2763246
ई–मेल: director@cirg.res.in,
बेबसाइट: http:// cirg.res.in
हेल्पलाइन न.: 0565–2763320

यमुना सिंडिकेट, मथुरा, ई–मेल : ys9456684421@gmail.com द्वारा मुद्रित